एटम बम और अहिंसा

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०

सम्पादक : प्यारेलाल

अंक २२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ७ जुलाई, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

खादीके पीछे पागल

राजकोट-राष्ट्रीय शाला (क़ौमी मदरसे)की चरखा-जयन्तीका निवेदन (अपील) नीचे दिया जाता है :

"'रेंटिया (चरखा) बारस' ता० ८-७-'४६ से २२-९-'४६ तक (७७ दिन)।

"भादों वद बारसके दिन गांधीजीका ७८वाँ जन्मदिन या सालगिरह होगी। गांधी-जयन्तीका मतलब है चरखा-जयन्ती।

"अहिंसक समाज-रचनामें गांधीजीने चरखेको अहिंसाके प्रतीक (निशानी)के तौर पर देशके सामने रक्खा है। जो चरखा बरसोंसे ग़रीबी, लाचारी और ज़ुल्मकी निशानी था, वह अब राजकाजी (सियासी), आर्थिक (माली) और सामाजिक स्वतंत्रता (आज़ादी)का अच्छे-से-अच्छा प्रतीक (निशानी) बन गया है। यह टेढ़ी बातको सीधी बनानेकी कोशिश है। इस कोशिशको सफल करना हमारी श्रद्धा (एतक़ाद) पर मुनहसर है। जितनी श्रद्धा होगी, उतना ही चरखेका वेग (रफ़्तार) बढ़ेगा।

"यह शाखा बारह बरसोंसे चरखा-जयन्ती मनानेका कार्यक्रम (प्रोग्राम) बनाती आई है। और इस कार्यक्रमसे चरखेके वातावरण (फ़िज़ा)को काफ़ी तेज़ी मिली है। अखिल भारत चरखा-संघने सारे हिन्दुस्तानके लिए इस योजना (तजवीज़)को अपनाया है।

"इस सालका कार्यक्रम ८ जुलाईको सुबह साढ़े-सात बजे प्रार्थनासे शुरू होगा। ७७ दिन तक पूरी ताक़तसे कातनेका सब लोग संकल्प (इरादा) करें। मैं आशा लिए बैठा हूँ कि हररोज़ एक आँटी कातनेवाले काफ़ी निकलेंगे। जो लोग इतना वक़्त न दे सकें, वे जितना बने उतने ही वक़्त तक कातनेका संकल्प करें।

"इस सूतका इस्तेमाल हरकोई अपने कपड़ोंके लिए खादी बनवानेमें कर सकेगा। काती हुई आँटियोंमेंसे कम-से-कम आंटियाँ यहाँ भेजी जायँ। जो हरसाल सिक्के दान करते हैं, वे ७७ सिक्के भेज सकते हैं। मगर दानमें बापूजी सूतके दानको ही सबसे अच्छा समझते हैं।

"हररोज सुबह साढ़े-सात बजे मिलकर प्रार्थना होती है और बादमें सब मिलकर कताई करते हैं। उसमें पहले नम्बरके भाई और बहनें हिस्सा लेती हैं। उम्मीद है कि इन ७७ दिनोंमें राजकोटवासी ज़्यादा-से-ज़्यादा तादादमें प्रार्थना और सामुहिक कताईमें हिस्सा लेंगे।

"हमारे काठियावाड़के पहले नम्बरके नेता श्री दरबार साहबने ७७ आँटी कातनेका संकल्प किया है। आशा है, इस योजनाको सब अपना लेंगे और कितना कातनेका इरादा किया है, उसकी खबर यहाँ भेजेंगे।

"हमने हिसाब लगाया है कि राष्ट्रीय शालाके कार्यकर्त्ता और छोटे विद्यार्थी २० लाख गज सूत कातेंगे। उम्मीद है कि वीराणी कन्या विद्यालय और वीराणी हाईस्कूलमें भी, जहाँ कताईको पढ़ाईके कार्यक्रममें रक्खा गया है, अच्छे पैमाने पर इन दिनोंमें कताई होगी।

"ईश्वरकी मरज़ी होगी, तो यह संकल्प सफल होगा।

राष्ट्रीय शाला, २४-६-'४६ सेवक,
नारणदास खु० गांधी"

श्री नारणदास गांधी खादीके पीछे पागल हैं। सूतकी दुकानकी मेरी कल्पना (ख़याली तसवीर)में दो विचार समाये हुए हैं। एक तो यह कि जहाँसे जितना और जैसा सूत मिले, इकट्ठा करना। यह सूत सूतकी शकलमें सिर्फ़ जुलाहेके घर ही जाय और ऐसी हालतमें जाय कि जितनी तेज़ीसे मिलका सूत बुना जा सकता है, उतनी ही तेज़ीसे बुना जा सके। ऐसा करनेके लिए सब हाथकता सूत दोहरा करके उसे फिर चरखे पर बल चढ़ाकर जुलाहेके वहाँ भेजा जाय। जिस सूत पर यह सब नहीं किया गया हो, उसे मैं सूत ही नहीं मानता। आखिर तो दोहरे और इकहरे सूतको अलग-अलग हिस्सोंमें रखना पड़ेगा, जिससे कि दोहरेकी क़ीमत ही अलग लगाई जा सके। वह दिन अभी दूर है। अभी फ़ौरन तो जिस जगह सूतका भण्डार, दुकान या बैंक हो, वहाँ पर नंबरके हिसाबसे सूतको अलग-अलग किया जाय। सूतको दोहरा करके बल चढ़ानेकी क्रिया (अमल) भी वहाँ होनी चाहिये। और उस सूतकी खादी बुननेकी सहूलियत भी होनी चाहिये।

दूसरी बात याद रखनेकी यह है कि टकसालमें सोना-चाँदी सब आता है, लेकिन बाहर तो सोने-चाँदीके सिक्के ही जाते हैं। इसी तरह सूतके भण्डारमेंसे भी सिर्फ़ खादीरूपी सिक्के ही बाहर जा सकते हैं। ऐसा हो तभी हाथके सूतके दोष (नुक़्स) दूर हो सकते हैं और खादी भी हमारी मानी हुई हदसे ज़्यादा सुधर सकती है। यह काम ज़बरन् तो हो नहीं सकता। इसके लिए खादीसेवकको सच्चा, निस्स्वार्थ (बेगरज़) और शास्त्रीय दृष्टिवाला (सायन्सकी निगाहसे देखनेवाला) बनना होगा। चरखा-संघका यही काम होना चाहिये। ऐसा करनेसे अगर खादी बेचनेके सब भण्डार बन्द हो जायँ और खादी पहननेवाले इने-गिने ही रह जायँ, तो उसमें शरमकी कोई बात न होगी। मगर खादी दंभ (दिखावे) और झूठका प्रतीक (निशानी) बनकर खपे, तो वह चरखा-संघ और कांग्रेसके लिए शर्मकी बात होगी। इतना ही नहीं, खादी स्वराजकी शान और ग़रीबोंकी साथिन भी नहीं रहेगी। ऐसा ही हो तो खादीके पीछे इतनी मेहनत क्यों की जाय? दूसरे बहुत-से धन्धोंकी तरह खादी भी रह जाय तो भले रह जाय। जो खादीके पीछे पागल हैं, वे तो सिर्फ़ खादीके शास्त्र (सायन्स)का रहस (राज़) समझ लें। और उसके पीछे फ़क़ीरी लेकर यह साबित करें कि खादी अहिंसाकी मूर्ति है।

पूना जाते हुए रेलमें, ३०-६-'४६
('हरिजनबन्धु'से)

मोहनदास करमचन्द गांधी

www.vinoba.in

भयानक ख़्वाब

जब गांधीजी मसूरीमें ठहरे हुए थे, तो वहाँ एक अंग्रेज़ भाईने उनसे पूछा कि क्या अणु-बमका आतंक (दहशत) लोगोंको अहिंसा अपनानेके लिए मजबूर न कर देगा? अगर सब लोगोंके पास अणु-बम हुआ, तो वे उसे इस्तेमाल नहीं करेंगे। क्योंकि उन्हें पता होगा कि उसके इस्तेमालसे वे सब तबाह हो जायँगे। गांधीजीकी राय थी कि ऐसा नहीं होगा। उन्होंने कहा: "हिंसक आदमीकी आँखें .खुशीसे चमक उठेंगी, क्योंकि वह देखेगा कि अब वह पहलेसे बहुत ज़्यादा तबाही और मौत फैला सकता है।

"डर तो यह है कि पहले अणु-बमके अपने निशाने पर बैठनेसे पहले ही अणु-बमके भेदको जाननेकी दौड़का नतीजा यह होगा कि हिंसाका दौर ख़त्म होनेके बजाय, व्यक्ति (फ़र्द) की सब आज़ादी ख़त्म हो जायगी और ऐसी दहशत फैलेगी, जो आज तक देखी नहीं गई। १७ सायन्सदाओं (जिनमें ५ नोबल प्राइज़ पाये हुए हैं), जनरलों और पण्डितों (आलिमों)ने 'अणु-बमके पूरे अर्थ पर रिपोर्ट' दी है। उस रिपोर्टका नाम है, 'एक दुनिया, या कोई नहीं।' उसमें वे हमें बहुत दबी ज़बानसे उस तबाहीके बारेमें ख़बरदार करते हैं, जो बड़ी तेज़ीसे हमारी तरफ़ लपकी चली आ रही है। उसे पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जनरल ऑर्नल्ड उन नये क़िस्मके अणु-बमोंका ज़िक्र करते हैं, जिनके बारेमें पहली तहक़ीक़ात हो चुकी है। उन्हें बनाना हदसे ज़्यादा सस्ता पड़ता है। पर वे इतनी तबाही ढा सकते हैं कि उस पर यक़ीन नहीं होता। इसके बाद वे कहते हैं: "हवाई ताक़तसे तबाही बेहद सस्ती और आसान हो गई है . . . सभ्यता (तहज़ीब)के जीने या मरनेका सवाल उन लोगोंकी दोस्ती और समझ पर निर्भर या मुनहसर होगा, जिनके हाथमें हवाई ताक़त होगी। रेडार (बिजलीकी किरणोंसे अँधेरेमें फ़ासले पर आती हुई चीज़को टटोलनेका एक आला या यंत्र)के माहिर सायन्सदाँ लुई एन० रिडेनॉरने बताया है कि किस तरह बेहद एहतियात या सावधानी बरतने पर भी बहुतसे बम अपने निशाने पर बैठ ही जायँगे। और सायन्सदाँ एडवर्ड यू० कॉण्डन लिखते हैं: "थोड़ेसे बम ही तबाहीके लिए काफ़ी होते हैं। जो लोग तोड़-फोड़का काम करना चाहें, वे सारे युनाइटेड् स्टेट्समें जगह-जगह ज्वालामुखी छिपा सकते हैं, जो एक मुक़र्ररा (नियत) दिन पर फटकर क़यामत ढा देंगे, जैसा कि पर्ल हार्बर पर हुआ था। . . . जिस जगह ऐसा एक बम फटेगा, वहाँ कम-से-कम एक मीलके दायरेमें कोई चीज़ मह.फ़ूज़ नहीं रह सकेगी। पन्सारीकी दुकानकी मेज़के नीचे टी० एन० टी० (एक क़िस्मकी फटनेवाली बारूदका २० हज़ार टनके बराबर अणु-बम) छिपाया जा सकता है।"

मि० कॉण्डन अपना बयान जारी रखते हुए कहते है: "ऐसी तोड़-फोड़से बचनेके लिए युनाइटेड् स्टेट्सको जो हुकूमत क़ायम करनी होगी, उसमें पुलिसका राज इतना कड़ा होगा, जिसकी इतिहास (तवारीख)में कोई मिसाल नहीं मिल सकती।" डॉ० हेराल्ड सी० यूरे एक आख़िरी बाब (अध्याय)में इन अणु-यंत्रोंकी दौड़के इस पहलूको .खूब विस्तारसे (तफ़सीलसे) समझाते हैं: "बम पड़नेसे बहुत पहले युनाइटेड् स्टेट्सके लोग अपनी आज़ादी खो बैठे होंगे, और एक कड़ी नादिरशाही हुकूमत क़ायम हो चुकी होगी। परमाणु-यंत्रों (एटम)के जनरल आपसमें मिलकर निहायत .खुफ़िया और काली सलाहें किया करेंगे; घर और कारख़ानों पर उनका पूरा-पूरा क़ब्ज़ा होगा। .खुफ़िया पुलिस जासूसों और तोड़-फोड़ करनेवालोंको कोने-कोनेमें सूँघती फिरेगी। दूसरे मुल्कोंमें भी ऐसा ही होगा। और आख़िरमें हर जगह आतंक और दहशत छा जायगी।"

इन सायन्सदाओंकी रायमें इसका सिर्फ़ एक इलाज है। यह कि "सारी दुनियाके लिए एक ही इतनी मज़बूत हुकूमत हो कि लड़ाई हो ही न सके।" "यह समस्या हमें इतिहासके एक बड़े नाज़ुक मौक़े पर ले आई है। ज़्यादा इन्तज़ार करनेका मौक़ा नहीं रहा।"

नई दिल्ली, १७-६-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

फिरसे: ऊपरका मज़मून लिख चुकनेके बाद पता चला कि एम० फ्रेडरिक ज़ूलियो क्यूरीने अपीलकी है कि अगर दुनियाकी हुकूमतें अणु-बमको क़ाबूमें करनेके किसी फ़ैसले पर न पहुँचें, तो सायन्सदाओंको चाहिये कि वे अणु-शक्तिके बारेमें और खोज करना बन्द कर दें। यह सायन्सदाँ फ्रान्सके उन नुमाइन्दोंके सरदार हैं जो 'युनाइटेड् नेशन्स एटॉमिक एनरजी कमीशन' पर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा: "अगर कोई फ़ैसला नहीं होता, . . . तो हम सायन्दाओंका यह फ़र्ज़ होगा कि हम इस मैदानमें खोज करनी बन्द कर दें और सायन्सकी इज़्ज़त न बेचें।"

तारीफ़के लायक़ मिसाल

ख़ासकर केरल (मलावार)के रहनेवाले और बम्बईके अलग-अलग दफ़्तरोंमें काम करनेवाले सच्चे दिलके कुछ नौजवानोंने एक होकर गाँवकी तरक़्क़ी और बेहबूदीके लिए एक स्कीम तैयारकी और उस पर अमल करनेकी ग़रज़से सन् १९४५के जुलाई महीनेमें एक ग्राम-सेवा-समिति क़ायम की। समितिका काम सात मेम्बरोंसे शुरू हुआ। इस वक़्त कुल १५ मेम्बर हैं और हरएक मेम्बर अपनी मामूली तनख्वाहसे कुछ बचाकर हर महीने १०) बतौर चन्देके देता है।

अपने कामका सिलसिला जमानेके लिए उन्होंने अपनेमेंसे एक भाई श्री के० कुमारन्को ग्रामोद्योगकी यानी देहाती दस्तकारियोंकी तालीम लेने भेजा। अक्तूबर १९४५में अपनी तालीम पूरी करके उन्होंने दक्षिण मलाबारके पेरुर गाँवमें तजरबेके तौर पर एक केन्द्र या सेण्टर शुरू किया। गाँवकी एक रहमदिल और दरियादिल बहनने अपना एक छोटा घर इस कामके लिए दे दिया। इस तरह गाँवमें तामीरी कामका एक सेण्टर खुला और वहाँ कताईका क्लास शुरू किया गया। धीमे-धीमे वहाँ एक वाचनालय और पुस्तकालय, हिन्दुस्तानीके क्लास, मुफ़्त दवा देनेका एक केन्द्र, बुनाईका एक सेण्टर और खादी-भण्डार शुरू हो गया। इन लोगोंके इन तरह-तरहके कामोंका ब्योरा नीचे दिया गया है:

"९॥से ४॥ तक कताईके क्लास चलते हैं। बीचमें एक घण्टा आरामका रक्खा गया है। पींजना भी सिखाया जाता है। और सीखनेवालोंको .खुद ही अपनी पूनी बनाकर कातना होता है। हर एक क्लास क़रीब १॥ महीने तक चलाया जाता है, और इस अरसेमें सीखनेवाले अच्छा कातने लगते हैं।

"अब तक ऐसे ३ क्लास चलाये गये, जिनमें कुल ३० सीखनेवाले शरीक हुए थे। १० सीखनेवालोंका चौथा क्लास फ़िलहाल चल रहा है। क्लासमें सीखनेवालोंको कातने और पींजनेके लिए चरखा और पींजन वग़ैरा जो सरंजाम दिया जाता है, वह क्लास ख़तम होने पर उन्हें अपने साथ घर ले जाने दिया जाता है।

"हर हफ़्ते कता हुआ सूत उन्हें केन्द्रमें जमा करना होता है। उस सूतकी क़ीमतमेंसे एक तिहाई रक़म सरंजामकी क़ीमत पेटे और एक तिहाई उनको दी गई खादी पेटे जमा होती है — हम चाहते हैं कि हरएक कतवैया या कत्तिन खादी ही पहने — और बाक़ीकी एक तिहाई रकम उन्हें नक़द दी जाती है; या उसके बदलेमें कपास दी जाती है या थोड़ी रक़मकी कपास और बाक़ी नक़द रक़म दी जाती है। इस तरीक़ेसे कुछ ही महीनोंमें सीखनेवाले गाँठकी कोई पूँजी न लगाकर भी कातने और पींजनेके औजार बसा सकते हैं, और समय पाकर वे अपने घरके लोगोंको कपड़ेके बारेमें स्वावलम्बी बना सकते हैं। दूसरी तरफ़ इस तरीक़ेसे समितिको बार-बार पूँजी लगानेकी ज़रूरत नहीं पड़ती।

www.vinoba.in

"अब तक समितिने ४०से ज़्यादा कातनेवाले तैयार किये हैं और हर हफ़्ते औसतन् १५० गुण्डी सूत कतता है।

"कपड़ेके मामलेमें गाँवको स्वावलम्बी बनानेकी ग़रज़से मार्च १९४६ में एक बुनाई केन्द्र भी शुरू किया गया है, जो गांधीनगर (तिरुपुर)के मशहूर खादी-उत्पत्तिकेन्द्रमें तालीम पाये हुए एक होशियार जुलाहेकी देखरेखमें चल रहा है।

"कातनेवालोंको खादी देने और गाँववालोंमें खादीको लोकप्रिय (आम पसन्द) बनानेके लिए हमने गाँवमें एक खादी-भण्डार भी खोला है। फ़िलहाल तो हम खादीकी कम-से-कम माँग भी पूरी नहीं कर पाते हैं।

"गाँवके एक हिन्दी पण्डितकी मददसे एक हिन्दुस्तानी क्लास खोला गया है और वह बराबर चलता है। नई हिन्दुस्तानी सभाकी ओरसे हाल ही लिये गये इम्तहानोंमें हमारे केन्द्रसे २१ विद्यार्थी बैठे थे, और वे सब पास हुए हैं। आजकल हम २० विद्यार्थियोंको हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा, मद्रासकी मध्यमा परीक्षाके लिए तैयार कर रहे हैं।

"वाचनालयमें आजकल ३ रोज़ाना और २ हफ़्तेवार अख़बारोंके अलावा २ मासिक पत्र या रिसाले भी आते हैं। ज़्यादातर अख़बार या रिसाले उन-उन अख़बारवालोंकी तरफ़से मुफ़्त आते हैं। इनके अलावा, हम अपना एक हाथसे लिखा मासिक — ग्रामसेवकम् — भी निकालते हैं, और वह गाँववालोंमें घुमाया जाता है। पुस्तकालयमें राजनीति, और अर्थशास्त्र पर अंग्रेज़ीमें और मुल्की ज़बानोंमें लिखे गये साहित्य (अदब) का अच्छा-सा संग्रह है।

"पेरुर गाँवके चारों ओर सात मीलके घेरेमें एक भी अस्पताल नहीं है। फिर ग़रीबोंको मुफ़्त दवा देनेवाले अस्पतालकी तो बात ही क्या? इसलिए हमने एक मुफ़्त दवाखाना भी खोला है। शुरूमें मरीज़ोंकी तादाद औसतन् हर रोज़ ३से ५ तक रहती थी। अब वही बढ़कर ५०–६० हो गई है। हमें एक होमियोपैथ डॉक्टरकी सेवायें भी मिल जाती हैं।

"मरीज़ोंकी बढ़ती हुई तादादको देखते हुए हम दवाखानेके साधनोंको बढ़ानेका और एक ज़्यादा डॉक्टर रखनेका इरादा करते हैं। कताईके क्लासोंमें, हिन्दुस्तानीके क्लासोंमें और मुफ़्त दवाखाने वग़ैरामें किसी भी धर्म या जातिके लोग शामिल हो सकते हैं। और यह एक ध्यान देनेकी बात है कि हमारे दवाखानेमें आनेवाले बीमारोंमें ज़्यादा तादाद हरिजनों और मुसलमानोंकी होती है।

"हमारे कामके इस थोड़े अरसेमें हमें अब तक कुल रु० १,४००) बतौर दानके नक़द मिले हैं। और हमारे बढ़ते हुए केन्द्रके लिए मकान बनानेके वास्ते गाँववालोंकी तरफ़से हमको रु० ४००) की क़ीमतका सामान मिला है।

"संस्थाके काममें ४ भाई अपना सारा वक़्त देते हैं, (उन्हें मेम्बरोंके चन्देकी रक़मसे मेहनताना दिया जाता है) और ३ भाई थोड़ा वक़्त देकर काममें मदद पहुँचाते हैं।"

इस कामको लोगोंने जिस तरह अपनाया है, उससे पता चलता है कि फ़सल तो ख़ूब पकी है, मगर उसे काटनेवालोंकी कमी है।

मसूरी, ३०–५–'४६
('हरिजन'से) प्यारेलाल

नई किताब	मूल्य	डाकख़र्च
ईशु ख्रिस्त — (किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०–१–०
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधरी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०–६–०	०–१–०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१–८–०	०–५–०
एक धर्मयुद्ध — (महादेवभाई हरिभाई देसाई)	०–८–०	०–२–०

www.vinoba.in

निराशाजनक चित्र

एक पत्र-लेखक (ख़त लिखनेवाले) भाई, जो अपने विषयके जानकार हैं, गांधीजीके नाम लिखे एक पत्रमें बताते हैं कि एक ओर जब कि सरकार अकालकी पहली अवाईका ऐलान करके अख़बारी बयान निकाल रही थी, उसी वक़्त दूसरी ओर बंगालके बन्दरगाहोंसे चावल बाहर मेजा जा रहा था। जब यह ख़बर अख़बारोंमें छपी कि जनवरी १९४६में कलकत्ता बन्दरसे चावल बाहर मेजा जा रहा था, तो उससे बड़ी सनसनी फैली। और अलग-अलग हलक़ोंसे सरकार पर जो दबाव डाला गया, उसका नतीजा यह हुआ कि केन्द्रीय (मरकज़ी) और प्रान्तीय (सूबेकी) सरकारोंने इस बातका यक़ीन दिलाते हुए बयान निकाले कि आइन्दा बंगालसे कभी चावल बाहर नहीं मेजा जायगा। इतने पर भी चटगाँवके बन्दरगाहसे चावलका बाहर मेजा जाना चालू रहा। 'बंगाल मॅन्युफैक्चरर्स ऍण्ड ट्रेडर्स फेडरेशन' (बंगालके उत्पादकों और बेपारियोंके संघ)ने २६ मईको कलकत्ताके श्रद्धानन्द पार्कमें हुई एक आम सभामें यह बात ज़ाहिर की थी। इसके जवाबमें २८ मईको बंगाल सरकार इस मतलबका एक अख़बारी बयान निकालकर ही रह गई कि "टिपरा स्टेट एजेन्सी चटगांवसे चावल बाहर भेज रही है और बंगाल सरकार इसके लिए जवाबदार नहीं!"

सरकारके निकम्मे और कठोर इन्तज़ामकी एक और मिसाल देते हुए ख़त लिखनेवाले भाई बताते हैं कि "पिछले बारह महीनोंमें लगभग तीस लाख मन गेहूँ सरकारी गोदामोंमें सड़ गये हैं।" आज यह बात सब कोई जानते हैं। वे भाई यह सुझाते हैं कि अनाजके वितरण (बँटवारे) और रक्षण (हिफ़ाज़त)का काम बेपारियोंको सौंप देना चाहिये, जो जनताके नुमाइन्दोंकी बनी कमेटियोंके मातहत उनकी सख़्त निगरानीमें नामके कमीशन पर यह काम करें।

आगे वे भाई लिखते हैं कि सरकार मामूली क़िस्म और अच्छी क़िस्मके चावलों पर प्रति मन क्रमशः ४) और १०) के हिसाबसे नफ़ा कमाती है, जब कि बेपारी और चावलका रोज़गार करनेवाले पहले मन पीछे सिर्फ़ २ से ४ आने नफ़ा कमाते थे। इस सबके अलावा, वे भाई लिखते हैं कि सरकार जूटकी खेती और कारख़ानोंके लिए धानके खेतों पर कब्ज़ा कर रही है। "पिछले अरसेमें सरकारने धानके खेतोंके एक बहुत बड़े हिस्से पर फ़ौजी छावनियों, हवाई अड्डों और कारख़ानोंके लिए कब्ज़ा कर लिया है। इन खेतोंको तुरन्त ही जुताईके लिए छोड़ देना चाहिये। १९४५में करीब ९ लाख बीघा ज़मीन, जो १९४४ में जोती गई थी, बिनजोती रह गई। इसके अलावा चालीस लाख बीघा ज़मीन ऐसी है जो अब तक कभी जोती ही नहीं गई है। इसे अगर जोता जाय तो बहुत बड़ी मात्रा (मिक़दार)में अनाज पैदा किया जा सकता है।"

इस दरमियान गाँवोंमें मौतकी छाया पड़नी शुरू हो गई है और कलकत्तेमें तो भुखमरीके कारण लोगोंके मरनेकी ख़बरें भी आने लगी हैं। ख़त लिखनेवाले भाई बताते हैं कि, "ढाकामें चावल ५०) मन और मैमनसिंगमें ४५) मन बिक रहा है। दूसरे ज़िलोंमें चावल ४०)से ३०) मन तक बिकता है। बचतवाले ज़िलोंमें भी चावल २०) मन बिक रहा है। इससे पहले चावलका मामूली भाव ४) मन था। सरकारके निकम्मेपन और इनसानकी तकलीफ़ोंके प्रति कठोर लापरवाहीका इससे ख़राब चित्र मिलना मुश्किल है। इससे सारे सूबेमें रोष (ग़ुस्सा) पैदा हुए बिना नहीं रहेगा। हम उम्मीद करें कि इस बातसे ताल्लुक़ रखनेवाले अधिकारी (अफ़सर) तुरत ही इन शिकायतों पर ध्यान देंगे और उन्हें दूर करनेके लिए ठोस क़दम उठायेंगे।

पूना जाते हुए रेलमें, २९–६–'४६
('हरिजन'से) प्यारेलाल

हरिजनसेवक

७ जुलाई १९४६

एटम बम और अहिंसा

कुछ अमेरिकन दोस्त कहते हैं कि एटम बमसे ही अहिंसा निकलेगी। शायद वे यह कहना चाहते हैं कि जिस तरह ठूँस-ठूँसकर मिठाइयाँ खानेसे आदमीका मन मिठाईसे ऊब जाता है, उसे मतली होने लगती है, उसी तरह एटम बमकी तबाहीको देखकर दुनियाके दिलमें हिंसाके लिए नफ़रत पैदा हो जायगी। मगर वह थोड़े दिनोंके लिए होगी। जैसे ऊब मिटते ही आदमी फिर मिठाइयाँ खाने बैठ जाता है, उसी तरह एटम बमकी तबाहीके नज़ारेका असर दूर होते ही दुनिया दूनी रफ़्तारसे हिंसाकी तरफ़ दौड़ेगी।

कई बार बुराईमेंसे भलाई निकलती है। मगर वह ख़ुदाकी हिकमत है, इनसानकी नहीं। इनसानके हाथों तो हम यही देखते हैं कि भलाईका नतीजा भला और बुराईका बुरा होता है। बेशक यह संभव है कि एटॉमिक ताक़त (अणुशक्ति)का—जिसे अमेरिकन वैज्ञानिकों (सायंसदानों)ने और फ़ौजियोंने तबाहीके लिए इस्तेमाल किया है—इस्तेमाल भलाईके लिए भी हो सके। मगर अमेरिकन दोस्तोंके कहनेका यह मतलब न था। वे ऐसे भोले न थे कि कोई ऐसा सवाल पूछते जिसका एक ही जवाब हो सकता है। आग लगानेवाला तबाही और नुक़सानके लिए आगका इस्तेमाल करता है, जब कि गृहिणी उसी आगका इस्तेमाल इनसानको क़ूवत देनेवाला खाना पकानेमें करती है। जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, एटम बमने इनसानकी ऊँचीसे ऊँची भावनायें, जो उसे युगोंसे क़ायम रखती चली आ रही हैं, ख़त्म कर डाली हैं। पुराने जमानेमें लड़ाईके कुछ ऐसे क़ानून ज़रूर होते थे जो उसे कुछ बरदाश्त करने लायक़ बनाते थे। अब हम उसका असल रूप देख रहे हैं। आज ज़ोर-ज़बरदस्तीको छोड़कर लड़ाईका दूसरा कोई क़ानून ही नहीं है। एटम बमने मित्रराज्योंको एक खोखली जीत तो दी, पर साथ ही उसने थोड़े वक़्तके लिए तो जापानकी आत्माका ख़ून कर दिया है। लेकिन बरबाद करनेवाले राष्ट्र की आत्माका क्या हाल हुआ, यह कहना आज कठिन है। क़ुदरत किस तरह अपना काम करती है, यह समझना बड़ा मुश्किल है। इस रहस्य (राज़)का पता तो हम इस क़िस्मकी दूसरी चोटोंके अपने तजरबेसे ही लगा सकते हैं। अपनेको या अपने नुमाइन्देको ग़ुलामीके पींजरेमें रखे बिना कोई आदमी किसीको गुलाम नहीं रख सकता। इससे कोई यह न समझे कि जापानने अपने निन्दनीय (मज़म्मतके क़ाबिल) सपनोंको पूरा करनेके लिए जो बुरे काम किये, उनका मैं बचाव करना चाहता हूँ। दोनों पक्षों (फ़रीक़ों)में फ़रक़ तो सिर्फ़ दरजेका ही था। मैं मान लेता हूँ कि जापानका लालच ज़्यादा बुरा था। मगर इससे जिनका लालच कम बुरा था, उन्हें यह हक़ हासिल नहीं हो जाता कि वे राक्षस बनकर जापानके एक इलाक़ेमें समूचे मर्द, औरतों और बच्चोंका नाश कर डालें।

एटम बमकी इस बेहद दर्दनाक कहानीसे हमें सबक़ तो यह सीखना है कि जिस तरह हिंसासे हिंसाको नहीं मिटाया जा सकता, उसी तरह एक बमको दूसरे बमसे नहीं मिटाया जा सकता। इनसान सिर्फ़ अहिंसाकी मारफ़त ही हिंसाके गढ़ेमेंसे निकल सकता है। नफ़रतको सिर्फ़ प्यारसे ही जीता जा सकता है। नफ़रतके सामने नफ़रत दिखानेसे वह और भी फैलती और गहरी होती है। मैं जानता हूँ कि जो बात मैं कई बार कह चुका हूँ और जिस पर अमल करनेकी मैंने भरसक कोशिश भी की है, उसीको मैं आज दुहरा रहा हूँ। असलमें तो पहले भी मैंने कोई नई बात नहीं कही थी। मैंने जो कहा था, वह तो सनातन सत्य (क़ुदरती सचाई) है। हाँ, इतनी बात ज़रूर है कि मैंने कोई किताबी बात नहीं कही थी। मैं यह मानता हूँ कि जो चीज़ मेरी रग-रगमें भरी है, उसीको मैंने ज़ोरदार शब्दोंमें कहा है। साठ साल तक इस चीज़को जीवनके हरएक क्षेत्रमें आज़माकर मेरी श्रद्धा (एतक़ाद) और भी पक्की हुई है, और दोस्तोंके तजरबेसे भी उसे ताक़त मिली है। यह एक ऐसी जड़की सचाई है कि आदमी अगर अकेला हो तो भी बग़ैर किसी झिझकके इस पर डटकर खड़ा रह सकता है। मैक्समूलरने बरसों पहले कहा था: "जब तक सत्य पर अविश्वास रखनेवाले मौजूद हैं, सत्यको दुहराना ही पड़ेगा।" मैं इस बातको मानता हूँ।

पूना, १-७-'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

ख़ामख़ाह क्यों मारें?

अलीगढ़से यह सूचना आई है:

> "९ जूनके 'हरिजन-सेवक'में चौथे पृष्ठ पर आप लिखते हैं कि 'बन्दरों, परिन्दों और ऐसे जन्तुओंको, जो फ़सल खा जाते हैं, ख़ुद मारना होगा, या कोई ऐसा आदमी रखना होगा जो उन्हें मारे।' इस सम्बन्धमें मैं यह निवेदन (दरख़्वास्त) करना चाहता हूँ कि अगर फ़सलको खा जानेवाले जानवरोंको मारे बग़ैर ही फ़सलकी रक्षा आसानीसे हो सकती हो, तो उन्हें मारना ज़रूरी नहीं होना चाहिये। मिसालके लिए मैं आपको सूचना देना चाहता हूँ कि मेरे चाचाने रातको बैटरीकी रोशनी बन्दरोंकी ओर फेंक-फेंककर उन्हें अपने खेत छोड़नेके लिए मज़बूर कर दिया। इसलिए बन्दरोंको मारनेके बजाय उनको बैटरीके प्रयोगसे भगानेका मार्ग (रास्ता) आप क्यों न स्वीकार करें और पेश करें?"

यह सूचना पहले विचारसे तो अच्छी लगती है। लेकिन दूर तक विचार करनेसे लगता है कि बैटरीसे काम नहीं चल सकेगा। उससे मेरे खेतकी कुछ रक्षा हो सकेगी, मगर इर्द-गिर्दकी नहीं। स्वार्थी (ख़ुदग़रज़) बनकर दूसरोंका नुक़सान करना तो मेरे लिए ठीक नहीं होगा। वह भी हिंसा होगी। अहिंसाके नाम पर ऐसी हिंसा करनेमें हम झिझकते नहीं, जैसे कि हम अपने आँगनसे दूसरोंके आँगनमें साँप फेंकते हैं, कचरा डालते हैं। शुद्ध (पाक) अहिंसा बताती है कि अगर बन्दर वग़ैरासे बचना और समाजको बचाना आवश्यक (ज़रूरी) है, तो उनको मार डालना आवश्यक हो जाता है। सामान्य नियम तो यही है कि जितनी हिंसासे हम बच सकें, उतनीसे बचना हमारा धर्म (फ़र्ज़) है। सामाजिक अहिंसा ही समाजके लिए हो सकती है। व्यक्ति (शख़्स)को, जहाँ तक वह जा सकता है, जाना होगा। हर समय हर क़दम पर ध्यानसे विचार करना सबका परम कर्त्तव्य है। बग़ैर विचारे रूढ़ धर्म पर चलनेसे हमारी गति रुक जाती है।

३०-६-'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

ब्याह और ब्रह्मचर्य

सूरतके पाटीदार आश्रमसे जिन भाईने श्री नरहरि परीखको 'हरिजनों और सवर्णोंके ब्याह' के बारेमें सवाल पूछा है, उन्होंने यह दूसरा सवाल भी उठाया है :

"शादी करना, और जब तक स्वराज न मिले, ब्रह्मचर्यका पालन करना, ये दोनों चीज़ें एक साथ बैठती नहीं हैं। अगर ब्रह्मचर्य ही रखना हो तो शादी करनेकी क्या ज़रूरत? और अगर शादी करना हो, तो ब्रह्मचर्यको बीचमें क्यों लाया जाय? इनसान सभ्य (सुधरा हुआ) प्राणी है। ब्याह जैसा पवित्र रिवाज दाखिल करके उसने समाजमें व्यवस्था (इन्तज़ाम) और इन्साफ़ (न्याय) क़ायम करनेकी कोशिश की है। अगर शादीका रिवाज न होता, तो जातीय (मर्द-औरतके) सवाल पर घर, बाज़ार और गाँवमें तरह-तरहके झगड़े खड़े होते रहते। शादी करनेके बाद कामवृत्ति (नफ़्स)की बागडोर खुली छोड़ देनेको तो कोई नहीं कहता। उसमें संयम (रोक)के लिए जगह है। और संयमसे ही गृहस्थाश्रमकी खूबसूरती बढ़ती है। शादीका पहला मक़सद (हेतु) तो साथ रहकर एक-दूसरेको आगे बढ़ाना है। यह मानना ही पड़ेगा कि इसमें कामवृत्ति (नफ़्स)को मर्यादा (क़ाबू)में रखकर उसकी प्यास बुझाना मुख्य उद्देश्य (खास मक़सद) रहा है। स्वराज न मिलने तक नये ब्याहे जोड़ेसे ब्रह्मचर्य पालनेका अहद (प्रतिज्ञा) कराना उनकी ज़िन्दगीमें झूठ और दिखावा दाखिल करना है। इससे उनमें विकृति (बिगाड़) भी पैदा हो सकती है। जो मर्द-औरत अनोखे दरजेके होंगे, वे तो शादीके बन्धनमें पड़ेंगे ही नहीं। शादी करनेवाले तो आम लोग ही होंगे। . . . अच्छा हुआ कि पतिने बादमें बापूजीको कह दिया कि वह पत्नीके माता बननेके हक़को छीन नहीं सकते। इससे बापूजीकी एक तरहसे इज्ज़त बच गई। नहीं तो इस तरह ब्रह्मचर्यकी बातसे झूठ और दिखावे या ढोंगको मदद मिलनेके सिवा दूसरा नतीजा शायद ही निकलता।

"स्वराज मिलने तक ब्रह्मचर्य पालनेकी प्रतिज्ञा (अहद)का मर्म या भेद बापू समझावें, यह ज़रूरी है। मुझे तो यह एक हँसीकी बात लगती है।"

इस सवालमें यह मान लिया गया है कि ब्याह करनेमें पहली चीज़ विषय-भोग है। यह दुःखकी बात है। सचमुच तो ब्याहका मतलब औरत और मर्दकी गाढ़ी-से-गाढ़ी मित्रता (दोस्ती) होना चाहिये, और है। उसमें विषय-भोगको तो जगह ही नहीं। जिस शादीमें विषय-भोगको जगह है, वह सच्ची शादी ही नहीं, सच्ची मित्रता ही नहीं। ऐसी शादियाँ मैंने देखी हैं, जहाँ शादीका हेतु (मक़सद) सिर्फ़ एक-दूसरेका साथ और सेवा ही रहा है। यह सच है कि ऐसी शादियाँ मैंने इंग्लैण्डमें ही देखी हैं। मेरी अपनी मिसाल यहाँ बेमौक़ा न गिनी जाय, तो मैं कहूँगा कि भर जवानीमें विषय-भोगको छोड़नेके बाद ही हम ज़िन्दगीका सच्चा रस लूट सके। तभी हमारी जोड़ी सचमुच खिली और हम साथ मिलकर हिन्दुस्तानकी और इनसानकी सच्ची सेवा कर सके। यह बात मैं 'मेरे सत्यके प्रयोगों' (तलाशे हक़)में लिख चुका हूँ। हमारा ब्रह्मचर्य अच्छी-से-अच्छी सेवा-भावनामेंसे पैदा हुआ था।

हज़ारों ब्याह तो आम तौर पर जैसे हुआ करते हैं, हुआ करेंगे। उनमें विषय-भोग पहली चीज़ रहेगी। अनगिनत लोग स्वादकी खातिर खाते हैं। इससे स्वाद इनसानका धर्म नहीं बन जाता। थोड़े ही लोग ऐसे हैं कि जो ज़िन्दा रहनेके लिए खाते हैं। वे ही खानेका धर्म जानते हैं। इसी तरह थोड़े ही लोग औरत और मर्दके पवित्र रिश्तेका स्वाद लेनेके लिए, ईश्वरको पहचाननेके लिए शादी करते हैं। सच्चो शादीका धर्म तो वही पहचानते हैं और पालते हैं।

मालूम होता है कि तेन्दूलकर और इन्दुमतीके ब्याहके बारेमें पूरी बातें सवाल पूछनेवाले भाई नहीं जानते। उनके ब्याहकी प्रतिज्ञा (अहद) में दोनों की इच्छा (ख्वाहिश) की बात थी। प्रतिज्ञा हिन्दुस्तानीमें लिखी गई थी। अखबारवालोंने अपना ही अंग्रेज़ी तरजुमा छापा। इतनी बात पक्की है कि दोनोंकी ब्रह्मचर्य पालनेकी इच्छा थी। वह शादी विषय-भोगकी खातिर नहीं थी। दोनों एक-दूसरेको बरसोंसे पहचानते थे। इन्दुमतीके घरके लोगोंकी इजाज़त कड़ी कसौटीके बाद मिली थी। बादमें तेन्दूलकरकी क़ैद उनके रास्तेमें आई। दोनोंके बड़ोंकी ख्वाहिश थी कि शादी आश्रममें हो तो अच्छा। इन्दुमतीको आश्रममें आसरा मिला था, वहाँ उसे तसल्ली (आश्वासन) मिली थी। मैंने माना था कि दोनोंमें खूब सेवाभाव है। मैं समझता हूँ कि अभी भी ऐसा ही है। मैंने उनके लिए ब्रह्मचर्य स्वाभाविक (क़ुदरती) चीज़ मानी थी।

यह सब होते हुए भी ब्रह्मचर्यमें ढोंगको जगह हो सकती है। इसमें क़सूर ब्रह्मचर्यका नहीं, ढोंगका है। एक अंग्रेज़ी कवि (शायर)ने कहा है कि ढोंग (दंभ) अच्छे गुणोंकी तारीफ़ है। जहाँ सच्चे सिक्केकी क़ीमत है, वहाँ झूठा सिक्का सचेकी छायामें रहेगा ही। जहाँ अच्छे गुणोंकी क़दर है वहाँ अच्छे गुणोंका दिखावा भी रहेगा। दिखावेके डरसे अच्छे गुणोंको छोड़ना, यह कैसी दुःखकी और हैरानीकी बात है?

पूना जाते हुए रेलमें, ३०-६-'४६

('हरिजनबन्धुसे') **मोहनदास करमचंद गांधी**

हरिजनों और सवर्णोंका ब्याह

सूरतके पाटीदार आश्रमसे एक भाई श्री नरहरि परीखको लिखते हैं :

"बापूजीके राजनीति (सियासत) में दाखिल होनेके बाद छुआछूत मिटानेका काम काफ़ी तेज़ीसे आगे बढ़ा है। बापूजी पढ़ी-लिखी हरिजन लड़की सवर्ण हिन्दूके लिए ढूँढ़ सकेंगे, तो एक तरहसे यह काम आगे बढ़ेगा। मगर इस सवालका दूसरा पहलू भी है। हमारे मुल्कमें लड़कियोंकी तालीम पिछड़ी हुई है; तिस पर भी हरिजन जैसी पिछड़ी हुई क़ौममें तो पढ़ी-लिखी लड़कियाँ इनीगिनी ही हैं। अगर उनकी शादी सवर्णोंसे हो जाय, तो एक तरहसे वे अपने समाजसे अलग पड़ जायँगी और सवर्ण समाजमें मिल जायँगी। इससे हरिजनोंमें रहकर हरिजन बहनोंको आगे बढ़ानेमें वे मदद नहीं दे सकेंगी। ऐसी एक-दो मिसालें मैं जानता भी हूँ। इस तरह ऐसे ब्याहोंके ज़रिये हम एक तरहसे हरिजनोंको अँधेरेमेंसे निकलनेसे रोकते हैं। बहनोंके आगे बढ़नेसे समाज आगे बढ़ता है। ऐसी दलीलकी जा सकती है कि हरिजन समाजकी हीरे-जैसी बहनोंको सवर्णोंको देकर बापूजी हरिजनोंके लिए अँधेरे, अज्ञान (जहालत) और वहममेंसे निकलनेका दरवाज़ा बन्द कर देंगे। मुझे लगता है कि इस प्रकारके ब्याह बन्द होने चाहिये। एक ही शर्त पर सवर्णको हरिजन लड़कीसे शादी करनेकी इजाज़त होनी चाहिये। वह यह कि शादी करनेके बाद दोनों अपनी ज़िन्दगी हरिजनोंकी सेवामें लगा देंगे। वरना पढ़ी-लिखी हरिजन लड़कीकी शादी पढ़े-लिखे हरिजनसे ही कराना अच्छा होगा। ऐसा करनेसे वह बहन अपने ही समाजमें रहेगी और अगर वह सच्चे मानीमें तालीमयाफ़्ता (शिक्षित) होगी, तो अपनी क़ौमकी बहनोंके सामने एक मिसाल पेश करेगी।

"आपको पता होगा कि हमारे विद्यालयमें हरिजन विद्यार्थी सवर्णोंके साथ बिना किसी क़िस्मके भेदभाव (तमीज़)के रक्खे

www.vinoba.in

जाते हैं। श्री परीक्षितलाल हर साल एक-दो विद्यार्थी भेजते रहते हैं। इस साल हमारे यहाँ दो ऐसे लड़के हैं। उनमेंसे एकने मुझे पूछा: 'बापूजी पढ़ी-लिखी सवर्ण लड़कियोंका ब्याह पढ़े-लिखे हरिजन लड़कोंके साथ क्यों नहीं कराते? करने जैसी चीज़ तो यही है। अगर पढ़ी-लिखी सवर्ण बहनें हरिजन बन कर हरिजनोंके बीच रहें, तो हरिजन बहनें उनसे बहुत कुछ सीख सकती हैं और हरिजन-सेवाका काम तेज़ीसे आगे बढ़ सकता है।' मैं इसका जवाब दे सकता था, पर अच्छा होगा कि बापूजी .खुद ही जवाब दें। कुछ भी हो, इस सवाल पर गहरा विचार करनेकी ज़रूरत है।"

अगर कोई पढ़ी-लिखी हरिजन लड़की किसी सवर्णके साथ शादी करे, तो दोनोंको हरिजन-सेवाका इक़रार करना ही चाहिये। ऐसा ब्याह मनमानी मौज उड़ानेके लिए नहीं हो सकता। मैं तो ऐसा ब्याह करा ही नहीं सकता। अच्छे इरादेसे किये हुए ब्याहका भी नतीजा बुरा निकल सकता है। मगर इस पर हमारा कोई बस नहीं। एक भी हरिजन लड़की किसी अच्छे सवर्णसे शादी करे तो, इससे हरिजन समाज और सवर्ण समाजका फ़ायदा ही है। वे एक अच्छी मिसाल पेश करेंगे। हरिजन लड़की जहाँ जाय वहाँ अपनी .खुशबू फैलाये, तो ऐसी दूसरी शादियाँ होनेमें मदद मिल सकती है। छुआ-छूतका डर भाग जायगा। समाज समझने लगेगा कि इस तरहकी शादी करनेमें कोई बुराई नहीं है। ऐसी शादीसे जो बच्चे पैदा होंगे, वे अगर अच्छे निकले, तो छुआछूतको दूर करनेमें मदद करेंगे। हर एक सुधार आहिस्ता-आहिस्ता ही होता है। धीमी गति (रफ़्तार)से बेसब्र होना सुधारकी गति (रफ़्तार)के क़ानूनको न समझनेकी निशानी है।

सवर्ण लड़की हरिजनसे शादी करे, यह करने लायक़ चीज़ है। यह ज़्यादा अच्छा है, ऐसा कहते हुए मुझे हिचकिचाहट होती है। ऐसा कहनेमें यह बात आ जाती है कि औरतें मर्दोंसे नीची हैं। यह तो मानना पड़ेगा कि आज औरतें आम तौर पर नीची मानी जाती हैं। इस वजहसे मैं क़बूल कर सकता हूँ कि सवर्ण लड़कीका हरिजनसे शादी करना हरिजन लड़कीके सवर्णसे शादी करनेसे ज़्यादा अच्छा है। मुझसे बन पड़े तो अपने असरकी तमाम सवर्ण लड़कियोंको अच्छे हरिजनोंसे शादी करनेको ललचाऊँ। मैं तजरबेसे जानता हूँ कि यह कितना मुश्किल है। पुरानी नापसन्दगी निकालनी कठिन होती है। यह नापसन्दगी ऐसी भी नहीं कि हँसकर टाल दी जा सके। यह तो धीरजसे ही दूर हो सकती है। और अगर सवर्ण लड़की यह मान ले कि हरिजनसे शादी करनेसे ही सारा काम पूरा हो जाता है, और पीछे मनमानी मौज़शौक़में फँस जाय, तो उसका घर और घाट दोनों बिगड़े। हर एक इनसानमें सेवाभाव कितना है, आखिर इसी पर तो ऐसी शादियोंकी कसौटी होगी। सेवाभावके आधार पर हुई हर एक शादीसे हरिजन-सवर्ण ब्याहकी तरफ़ तिरस्कार (हिक़ारत) कम होगा। अखीरमें एक ही जात रह जायेगी, जिसका .खूबसूरत नाम होगा भंगी, यानी सुधारक, — हर एक क़िस्मकी गन्दगी दूर करनेवाला। हम सब चाहते हैं कि वह शुभ दिन ज़ल्द आवे।

सवाल पूछनेवालेको यह समझना चाहिये कि मेरी अच्छी-से-अच्छी ख्वाहिश भी, ख्वाहिश करते ही पूरी नहीं हो सकती। अपना इरादा ज़ाहिर करनेके बाद मैं अभी तक एक भी हरिजन लड़कीकी शादी किसी सवर्णसे करा नहीं सका। एक सवर्ण लड़कीकी एक हरिजनसे शादी करानेका मौक़ा मेरे हाथ आया है सही। ईश्वरकी मरज़ी होगी तो वह काम पूरा होगा।

('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

गोशालायें और पिंजरापोल

सरदार सर दातारसिंहने एक स्कीम (योजना) पेश की है। थोड़ेमें वह नीचे दी जाती है। आम तौर पर यह स्कीम सबको दिलचस्प लगनी चाहिये।

हिसाब लगानेसे पता चला है कि आज हिन्दुस्तानमें ६ लाखसे भी ज़्यादा ढोरोंकी बस्तीवाली कुल ३,००० गोशालायें हैं। ये सब गोशालायें हिन्दुस्तान सरकारकी कल्पनाके मुताबिक़ अपने यहाँ सुधार करने लगें, और साथ ही, आज, जब कि मुल्क पर अकालकी आफ़त मँडरा रही है, अपने यहाँ दूधकी पैदावार बढ़ायें, तो वे मुल्ककी आबादीको बहुत मदद पहुँचा सकती हैं। कहा जा सकता है कि इन गोशालाओंमेंसे आधी, यानी क़रीब १,५०० गोशालाओं या पिंजरापोलोंमें अच्छा इन्तज़ाम है। इनमें रहनेवाले मवेशियोंको नीचे लिखी क़िस्मोंमें बाँटा जा सकता है:

१. अच्छे दुधार	२० फ़ी सदी	१,२०,०००
२. मामूली, जो दूध बहुत ज़्यादा नहीं देते, लेकिन जो नई औलादके लिए काम आ सकते हैं	२०	,,	१,२०,०००
३. बूढ़े, अपाहिज और औलादके लिए निकम्मे	६०	,,	३,६०,०००

इनमेंसे दूधकी पैदावार बढ़ाने और नई औलाद पैदा करनेके लिए पहली और दूसरी क़िस्मके मवेशी काम आ सकते हैं। इन २,४०,०००मेंसे आधे दूध देनेवाले होंगे और आधे सूख चुके होंगे।

अगर इन मवेशियोंको ज़्यादा अच्छी .ख़ुराक दी जाय, गोशालाओंके इन्तज़ाममें ज़रूरी सुधार किये जायँ, कामकाजका ढंग ठीक किया जाय और ऐसी ही दूसरी ज़रूरी कार्रवाइयाँ की जायँ, तो दूधकी पैदावारमें आसानीसे १,२०,००० सेर या ३,००० मन दूधकी बढ़ोतरी हो सकती है।

इस हेतु या मक़सदको जल्दी ही पूरा करनेके लिए नीचे एक स्कीम (योजना)का ढाँचा दिया जाता है:

(१) दुधार ढोरोंको बूढ़े, अपाहिज, कमज़ोर और दूसरी तरह बेकार बने हुए मवेशियोंसे अलग कर दिया जाय, और इन बूढ़े, अपाहिज और कमज़ोर ढोरोंको दूर देहातमें भेज दिया जाय; या बेहतर यह हो कि उन्हें उनके लिए जंगलोंमें अलगसे निकाली गई गोचर-भूमियों (चरागाहों)में भेज दिया जाय। इससे गोशालाओं और पिंजरापोलोंकी भीड़ कम होगी और दुधार गायोंको ज़्यादा अच्छा दाना और चारा वग़ैरा दिया जा सकेगा। इन मवेशियोंकी तादाद बढ़ने न दी जानी चाहिये। इनकी और सूखे हुए ढोरोंकी व्यवस्था (इन्तज़ाम)का काम एक कमेटीके सिपुर्द किया जाना चाहिये।

(२) इस मक़सदको पूरा करनेके लिए मवेशियोंको नीचे लिखे मुताबिक़ बाँट देना चाहिये:

(क) दूध देने या ब्यानेवालोंको गोशालामें ही रखना चाहिये। जिनका दूध सूख गया है, मगर जो औलाद बढ़ानेके काम आ सकते हैं, उन मवेशियोंको गोशालाके नज़दीक, पास-पड़ौसकी, अपनी किसी ज़मीन पर रखना चाहिये, या ऐसी जगह रखना चाहिये जहाँसे ब्यानेका वक़्त नज़दीक आने पर उन्हें वापस गोशालामें लाया जा सके। और, जो गायें सूख जायँ, यानी दूध देना बन्द कर दें, उन्हें गोशालासे हटाकर वहाँ भेज देना चाहिये।

(३) जिन गोशालाओं और पिंजरापोलोंमें मवेशियोंकी भीड़ छँटी होगी, वे अपने मवेशियोंको मुनासिब तरीक़ेसे रखनेके लिए ज़रूरी जगहका इन्तज़ाम कर सकेंगी, उनको शास्त्रीय ढंगसे चारा-दाना दे सकेंगी और दूसरे ज़रूरी सुधार भी कर सकेंगी।

(४) इन गोशालाओंको इससे भी ज़्यादा मदद देने, बढ़ावा देने, और ज़्यादा अच्छा काम करनेकी प्रेरणा देनेके लिए एक

तजवीज़ यह पेश की गई है कि जो लोग अकाल या क़हतसालीके दिनोंमें अपने दुधार ढोरोंको सँभाल न सकें, उनके ढोर सार-सँभालके लिए ये संस्थायें .खुद रख लें, या जहाँ ज़रूरी पैसोंका इन्तज़ाम हो सके, वहाँ इस तरहके ढोरोंको ख़रीद लें और अपनी दूधकी पैदावारको ताबड़तोड़ बढ़ानेकी शर्त क़बूल करें। इन गोशालाओंको पैसेकी मदद दी जाय और ५० फ़ी सदी क़ीमतें घटाकर मवेशियोंके लिए तैयार दाने और चारेका इन्तज़ाम किया जाय। इस शर्तके बदलेमें, ज़रूरतके मुताबिक़, अगर सरकार चाहे, तो वह आसपासके हलक़ोंमें ग़रज़मन्द लोगोंको दूध पहुँचानेके लिए गोशालाओंमें पैदा होनेवाले दूधका तीसरा हिस्सा .खुद ख़रीदनेका हक़ अपने लिए हासिल कर सकती है।

(५) खली, बिनौले वग़ैरा ऐसी चीज़ोंके बदले, जो आम तौर पर सीधी इनसानोंके खानेके काम आती हैं, मवेशियोंको दूसरी चीज़ें खिलाई जायँ।

(६) यहाँ एक बात नोट करने लायक़ है कि नाजसे मिलनेवाली भूसी, चोकर, चूरी जैसी चीज़ोंको .ख़ुराकके तौर पर इस्तेमाल करनेके बजाय ढोरोंको खिलानेसे हमें कहीं ज़्यादा ताक़त पहुँचानेवाला दूध मिलता है। और, इस तरह आज हमारे पास खानेकी जो चीज़ें मौजूद हैं, उनमें सिर्फ़ इज़ाफ़ा ही नहीं होता, बल्कि इन चीज़ोंका ऐसा इस्तेमाल करनेमें किफ़ायत भी होती है। इस तरीक़ेसे एक तरह दोहरा फ़ायदा होता है। एक तरफ़ इसकी वजहसे इनसानके लिए ज़रूरी खानेकी चीज़ोंमें इज़ाफ़ा होता है और दूसरी तरफ़ तंगी या कमीके दिनोंमें मवेशियोंको भरपेट .ख़ुराक मिल जाती है, और उन्हें भूखों मरनेकी नौबत नहीं आती।

(७) ढोरोंकी .ख़ुराकका काम देनेवाली तैयार चीज़ों और रोज़के काम आनेवाली दूसरी मामूली चीज़ोंको लाने-मँगानेके लिए इन संस्थाओं या जमातोंको ढुलाईके साधनोंकी जितनी सहूलियतें दी जा सकें, दी जानी चाहिये। गोशालाओं या पिंजरापोलोंमें ढोरोंके कामकी .ख़ुराक या चारेका कितना संग्रह है और उनकी ज़रूरतें कितनी हैं, इसकी जाँचके लिए और ज़रूरी ब्योरे व आँकड़े इकट्ठा करनेका काम फ़ौरन ही शुरू किया जाना चाहिये। घास, चारा वग़ैरा ज़रूरी चीज़ें इफ़रातवाली जगहोंसे तंगीवाली जगहोंमें पहुँचानेका इन्तज़ाम बहुत पहलेसे कर लिया जाना चाहिये। गोशालाओंके डेवलपमेण्ट (विकास या नशोनुमा)के लिए मुकर्रर किये गये अफ़सरोंकी मारफ़त पहलेसे इन सब बातोंका इन्तज़ाम किया जाना चाहिये और उन्हें इस योजना पर अमल करनेकी ज़िम्मेदारी सौंपनी चाहिये।

सरदार सर दातारसिंहने हरएक सूबेमें गोशालाओंके लिए डेवलपमेण्ट अफ़सर रखने, काम करनेवालोंको ज़रूरी तालीम देने और ज़रूरतकी जगहोंमें अच्छी नसलके लिए बढ़िया साँड़ भेजनेकी तीन सूचनायें साफ़ तौरसे की हैं। सरदार साहबका यह कहना बिलकुल सही है कि इस योजनाको अच्छी तरह कामयाब बनानेके लिए सरकार और रिआयाके बीच दिली सहयोगकी ज़रूरत है। उन्हें यक़ीन है कि दयाका काम करनेवाले, मवेशियोंकी सार-सँभाल रखनेवाले और इस तरहके दूसरे काम करनेवाले मण्डलोंसे कहा जाय, तो वे सब ज़रूर ही इस योजनाको कामयाब बनानेमें हाथ बँटायेंगे।

मवेशियोंका भला चाहनेवाले एक दूसरे भाई यों लिखते हैं:

"ऐसा मालूम होता है कि आनेवाले कालके दिनोंमें कालवाले कुछ इलाक़ोंमें मवेशियोंके लिए घास-चारेकी बहुत तंगी रहेगी। अपने मवेशियोंको इस तंगीसे बचा लेनेके लिए चन्द सुझाव पेश करता हूँ। उम्मीद है कि आप उन पर ग़ौर करेंगे। सब कोई जानते हैं कि पहले 'बच्चोंको बचाओ' नामकी एक तहरीक शुरू हुई थी। क्यों न हम हिन्दुस्तानमें इसी तरह 'ढोरोंको बचाने'की एक तहरीक शुरू करें? आप जानते हैं कि लड़ाईके दिनोंमें हमारे बहुत-से ढोर क़त्ल कर डाले गये हैं। इसलिए अब जो बच रहे हैं, उन्हें भूखों मरने देना हमें पुसायेगा नहीं।

"मेरी एक ख़ास दरख्वास्त यह है कि जिन .ख़ुशहाल लोगोंके पास घासवाली ज़मीनके चक हों, उन्हें चाहिये कि वे उदारतापूर्वक अपने अहातोंमें कमज़ोर ढोरोंको चरनेकी या चरानेकी इजाज़त दें। क्योंकि इस तरीक़े पर ख़ासकर शहरी इलाक़ोंमें ही अमल किया जा सकता है, इसलिए ज़ाहिर है कि इससे बहुत बड़े पैमाने पर राहत नहीं मिलेगी। फिर भी मेरे ख़यालमें यह चीज़ सोचने लायक़ तो है ही।

"सूबेकी सरकारें अपने-अपने इलाक़ोंकी चुनी हुई जगहोंमें गोशालायें शुरू करें। जो लोग कालके ज़मानेमें अपने मवेशियोंको खिला-पिला न सकें, वे उन्हें इन गोशालाओंमें भरती करा आवें, और अकालकी साँसत ख़तम होने तक सरकारी ख़र्चसे इन ढोरोंको खिला-पिला कर जिलाया जाय। ऐसे मवेशियोंको बिलकुल मुफ़्त पाला जाय या बादमें उनके मालिकोंसे कुछ ख़र्च वसूल कर लिया जाय। यह एक तफ़सीलका सवाल है, जिसे सूबेकी सरकारें .खुद अपने ढंग पर हल कर सकती हैं। मवेशियोंके जुदा-जुदा मालिकोंको अलग-अलग चारा देनेके बदले एक जगह बहुतसे मवेशियोंको इकट्ठा करके उन्हें एक साथ खिलाने और उनकी परवरिश करनेका इन्तज़ाम करना सूबोंकी सरकारोंके लिए ज़्यादा आसान होगा।"

नई दिल्ली, २०-४-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

हफ़्तेवार ख़त

अहिंसाका तरीक़ा

जो लोग यह मानकर कि गांधीजी और कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीमें फूट पड़ गई है, वक़्तसे पहले बगलें बजा रहे थे, उनको बहुत जल्द मायूस (निराश) होना पड़ेगा। वे यह जानते ही नहीं कि अहिंसा कैसे काम करती है। मतभेदका मतलब फूट नहीं होता। 'अनेकतामें एकता' .क़ुदरतका क़ानून है। फूट डालनेवाली चीज़ तो अहंकार (.ख़ुदी) होता है। वफ़ादारीका सबूत हर बातमें हाँ-में-हाँ मिलाना नहीं, बल्कि देशके लिए अपना सब कुछ लगा देना है। इसलिए गांधीजीका मतभेद कांग्रेसको कमज़ोर बनानेवाला नहीं हो सकता था। वह तो उसे और मज़बूत बनानेके लिए ही था। एक दिन शामकी प्रार्थनाके बाद उन्होंने कहा: "वर्किंग कमेटीने बहुत सोच-समझकर अपना फ़ैसला किया है। उनका एक ही मक़सद है — हिन्दुस्तानकी भलाई। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप विश्वास रखें कि उन्होंने जो कुछ किया है, वह नेकनीयतीसे हिन्दुस्तानके भलेके लिए ही किया है, और उससे हिन्दुस्तानका भला ही होगा। कांग्रेसने साठ साल तक जो लगातार मुल्ककी सेवा की है, उससे आपकी इस श्रद्धाको ताक़त मिलनी चाहिये।"

बाक़ीके जितने रोज़ वे दिल्लीमें रहे, उन्होंने प्रार्थनाके बादके प्रवचनों (तक़रीरों)में दक्षिण अफ़्रीकाके सत्याग्रहके बारेमें कई बार लोगोंको कहा: "वहाँ पर कुछ गोरे गुण्डे सत्याग्रहियोंको सता रहे हैं। सत्याग्रही बड़ी शान्तिसे उनका सामना कर रहे हैं, मगर गुण्डोंका ज़ोर बढ़ता ही जाता है। दक्षिण अफ़्रीकामें हिन्दुस्तानी मुट्ठी भर ही हैं — सारे मुल्कमें दो लाखसे थोड़े ही ज़्यादा होंगे। जरा ख़याल कीजिये कि डॉक्टर नायकर और डॉक्टर दादू जैसोंके लिए हिन्दुस्तानियोंके लिए ख़ास बनाई हुई बस्तियों — भंगीबासों — में रहना क्या मानी रखता है? आप लोग ईश्वरसे प्रार्थना करें कि वह हमारे भाइयोंको आख़िर-दम तक बहादुरीसे जमे रहनेकी ताक़त दे, और गोरोंको सन्मति

www.vinoba.in

(समझ) दे। सच्चे दिलकी प्रार्थना वह कर सकती है, जो दुनियामें दूसरी कोई चीज़ नहीं कर सकती।"

उन्होंने सत्याग्रहियोंको उनकी हिम्मत और सहनशक्तिके लिए बधाई दी, जिन्होंने गुण्डोंकी बढ़ती हुई ज्यादतियोंके बावजूद हाथ तक नहीं उठाया। गांधीजीने कहा कि वह खुद पैदा तो हिन्दुस्तानमें हुए थे, मगर दक्षिण अफ्रीकाने उन्हें बनाया था। वह वहाँके कोने-कोनेसे वाक़िफ हैं। उन्होंने अपनी भरी जवानीके बीस साल वहाँ गुज़ारे थे। वे दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंको पहचानते हैं। उनके दिलमें जितनी मुहब्बत हिन्दुस्तानियोंके लिए है, उतनी ही वहाँके गोरोंके लिए भी है। उन्हें यह जानकर शर्म आती है कि कुछ गोरे वहाँ गुण्डोंका काम कर रहे हैं। उन्हें डर है कि यूनियनके बाकी गोरोंकी गुण्डोंके साथ हमदर्दी है। कम-से-कम मूक (खामोश) हमदर्दीके बिना इस तरहकी गुण्डाशाही चल नहीं सकती। उन्हें आशा है कि गोरे जल्द ही सत्याग्रहियोंकी ताक़त और ईमानदारीको पहचानेंगे और उनके दिलोंमें सत्याग्रहियोंके लिए इज्ज़त और हमदर्दी पैदा होगी। उन्होंने लोगोंसे अपील की कि वे ईश्वरसे प्रार्थना करें कि वह गुण्डों पर रहम करे। उन्होंने बताया कि आज हमें सत्याग्रहियोंको रुपये-पैसेकी मदद भेजनेकी ज़रूरत नहीं। उनके पास रुपया क़ाफी है। रुपयेसे वे जीत नहीं सकते। "लेकिन वक़्त आ सकता है जब कि दक्षिण अफ्रीकाके अपने भाइयोंकी मददके लिए हिन्दुस्तानमें शुद्ध सत्याग्रह करना आपका फ़र्ज़ हो जाय। मैं आज नहीं बता सकता कि उसका क्या रूप होगा। हिन्दुस्तान तेज़ीसे सारी मनुष्य-जातिकी इज्ज़तके रखवालेका दरजा हासिल कर रहा है। अगर दक्षिण अफ्रीकाके बहादुराना सत्याग्रहके जंगमें अपने भाइयोंकी मदद करनेका बोझ आपको ही उठाना पड़े, तो वह कोई बड़ी बात न होगी। मगर उसके लिए पहले आपका रास्ता साफ़ होना चाहिये। जब वह दिन आवेगा, तो मुझे पता चल जायगा। इस दरमियान मैं वाइसराय साहब और हिन्दुस्तानके गोरोंसे अपील करता हूँ कि वे इस बारेमें अपना फ़र्ज़ बजावें।"

उनकी बिदाईके भाषण (तक़रीर)से लोगोंके दिल भर आये थे। दो बारके थोड़े दिनोंके अंतरके सिवाय वे क़रीब तीन महीने दिल्लीके लोगोंके बीच रहे थे। उन्होंने जो क़ीमती-से-क़ीमती सौग़ात उन्हें दी थी, वह थी, मिलकर प्रार्थना करना। उसकी तरफ़ इशारा करते हुए उन्होंने कहा: "आप इस आदतको चालू रक्खें। प्रार्थनाके श्लोक आप बोलें चाहे न बोलें, उसकी मुझे परवाह नहीं। मगर आप अपने परिवारके साथ मिलकर, जिस वक़्त भी आपको सुभीता हो, पांच मिनट आँखें बन्द करके शान्तिसे बैठें और रामका ध्यान करें, तो मेरे लिए यह बस होगा।"

श्रद्धाका मर्म

दिल्लीकी धूल और गरमीमें तीन महीनोंकी अथक मेहनतके बाद आखिर गांधीजीको पंचगनी जाकर अपनी थकी हुई कायाको फिरसे ताज़ा करनेकी फ़ुरसत मिली है। दिल्लीमें आखिरी रोज़ उन्होंने कहा: "दो महीने पहाड़की हवा खाकर मैं बाक़ी सालके लिए तैयार हो सकता हूँ। मुझे ताज्जुब होता है कि इससे कितना फ़र्क़ पड़ जाता है। मगर मैं नहीं जानता कि सचमुच मेरी तबीयतको अच्छी रखनेवाली चीज़ पहाड़की हवा है या राम-नाम।" इससे पहले भी एक दिन उन्होंने अपने भाषणमें ईश्वर पर उनकी अपार श्रद्धाकी बात कही थी। गजेन्द्र-मोक्षकी कथा पर टीका करते हुए उन्होंने कहा था: "इस कथाका निचोड़ यह है कि इम्तहानके वक़्त ईश्वर हमेशा अपने भक्तकी मदद करता है। शर्त यह है कि ईश्वर पर जीती-जागती श्रद्धा हो और उसीका इनसान आसरा ले। श्रद्धाकी कसौटी यह है कि अपना फ़र्ज़ अदा करनेके बाद जो कुछ भी भला या बुरा नतीज़ा हो, इनसान उसे मान ले। सुख आये या दुःख आये, उसके लिए सब बराबर होना चाहिये। जनक राजाके बारेमें कहा जाता है कि एक बार उन्हें किसीने आकर कहा: 'महाराज! आपकी राजधानी मिथिला जल रही है।' उन्होंने जवाब दिया: 'मिथिलायां प्रदग्धायां न मे दह्यति किञ्चन —' मिथिलाको आग लगी है, तो मुझे उससे क्या? उनकी इस धीरज और शान्तिका रहस्य (राज़) यह था कि वह हमेशा जाग्रत रहते थे, हमेशा अपना फ़र्ज़ अदा करते थे। इसलिए बाक़ी सब कुछ वे ईश्वर पर छोड़ सकते थे। तो आप यह जान लें कि अव्वल तो ईश्वर अपने भक्तको मुसीबतोंसे बचा ही लेता है, और अगर मुसीबत आ ही पड़े तो भक्त शान्तिसे उसकी मरज़ीके सामने सिर झुकाकर खुशीसे उसे सह लेता है।"

एक सबूत

अगर गांधीजीकी इस श्रद्धाके लिए कि ईश्वर जिसे बचाता है, उसे कोई मार नहीं सकता, सबूत की ज़रूरत थी तो वह पूना लौटते वक़्त सफ़रमें मिल गया। रातके एक बजेके क़रीब जब गांधीजी की स्पेशल गाड़ी पूरी रफ़्तारसे जा रही थी, वह एकाएक नेरल और कर्जत स्टेशनोंके दरमियान पटरी पर रखे हुए बड़े-बड़े पत्थरोंसे टकराई। ये पत्थर ज़रूर किसीने जानबूझकर गाड़ीको उल्टानेके लिए रक्खे थे। इन्जनको नुक़सान पहुँचा। आखिरी डिब्बेका डायनेमा टूट गया। इन्जन-ड्राइवरने होशियारीसे गाड़ीको ठीक समय पर थाम न लिया होता, तो वह ज़रूर पटरीसे उतर जाती और उसमें बैठे हुए मुसाफ़िरों पर क्या बीतती, यह कहा नहीं जा सकता। मगर खुश-क़िस्मतीसे गाड़ी और मुसाफ़िर दोनों बच गये। तक़रीबन दो-तीन घंटे हथौड़ोंसे टूटे हुए हिस्सेकी मरम्मत होती रही, मगर गांधीजी मासूम बच्चेकी तरह बेखबर सोते रहे। सुबह उठे तो उन्हें पता भी न था कि रातको क्या हुआ था।

पूनामें प्रार्थनाके बाद उन्होंने कहा: "शायद यह सातवाँ मौक़ा है जब मैं इस तरह बालबाल बचा हूँ। मैंने किसीको कभी नुक़सान नहीं पहुँचाया। किसीसे मेरा बैर नहीं। मेरी जान लेनेकी कोशिश कोई क्यों करे? मगर दुनियाका ऐसा ही रवैया रहा है। आदमीकी सारी ज़िन्दगी खतरों और ज़ोखिमोंसे भरी है। क़ुदरतमें रचना और संहारके बीच निरंतर द्वन्द्व (जद्दोजहद) चलता रहता है। इससे छुटकारेका रास्ता मोक्ष (निजात) ही है। इस दुर्घटना (हादसे)से मेरी यह श्रद्धा और भी बढ़ी है कि शायद ईश्वर मुझे आपकी खिदमतके लिए १२५ साल तक ज़िन्दा रखना चाहता है। मेरे पास एक राम-नामके सिवा कोई ताक़त नहीं है। वही मेरा एक आसरा है। आप भी मेरे साथ रामका नाम लें और उसे अपने दिलमें जगह दें। राम टेढ़ेको सीधा बनानेवाला और बिगड़ीको सँवारने वाला है।"

पूना, ३०-६-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

विषय-सूची

			पृष्ठ
खादीके पीछे पागल	...	गांधीजी	२०९
भयानक ख्वाब	...	प्यारेलाल	२१०
तारीफ़के लायक़ मिसाल	...	प्यारेलाल	२१०
निराशाजनक चित्र	...	प्यारेलाल	२११
एटम बम और अहिंसा	...	गांधीजी	२१२
खामखाह क्यों मारें?	...	गांधीजी	२१२
ब्याह और ब्रह्मचर्य	...	गांधीजी	२१३
हरिजनों और सवर्णोंका ब्याह	...	गांधीजी	२१३
गोशाला और पिंजरापोल	...	गांधीजी	२१४
हफ़्तेवार खत	...	प्यारेलाल	२१५

www.vinoba.in